उत्तर—श्रवण कुमार डॉ. शिवबालक शुक्ल द्वारा रचित खण्डकाव्य है जो वाल्मीकि रामायण के 'श्रवण कुमार प्रसंग' पर आधारित है। 'श्रवण कुमार' खण्डकाव्य की कथा नौ सर्गों में विभक्त है जिसका सार संक्षेप निम्न प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है :

प्रथम सर्ग : अयोध्या सर्ग

'अयोध्या सर्ग' नामक प्रथम सर्ग में कवि ने इस नगरी में उत्पन्न हुए महान राजाओं का विवरण दिया है—अयोध्या में अनेक महान और शूरवीर राजा उत्पन्न हुए हैं यथा—पृथु, इक्ष्वाकु, ध्रुव, सगर, दिलीप, रघु, हरिश्चन्द्र, भगीरथ। राजा रघु के नाम पर इस कुल का नाम रघुवंश पड़ा। महाराजा दशरथ राजा अज के पुत्र थे।

अयोध्या नरेश राजा दशरथ के राज्य में सर्वत्र सुख, शान्ति तथा वैभव का निवास था। राजा दशरथ वीर योद्धा तथा महान धनुर्धर थे। वे शब्द भेदी बाण चलाने में निपुण थे।

प्रथम सर्ग में अयोध्या नगरी की स्थापना, इसका नामकरण, राज्यकुल के वैभव एवं उपलब्धियों का वर्णन है यथा :

सरि सरयू के पावन तट पर है साकेत नगर छविमान।
जिसमें श्री, शोभा, वैभव के कभी तने थे विपुल वितान॥

द्वितीय सर्ग : आश्रम सर्ग

(२००६)

सरयू नदी के तट पर एक आश्रम था जिसमें श्रवण कुमार और उसके नेत्रहीन माता-पिता सानन्द निवास करते थे। आश्रम में सर्वत्र सुख-शान्ति थी। श्रवण के माता-पिता की तपस्या के प्रभाव से वहां हिंसक पशु भी अपनी हिंसा भूल गए थे।

श्रवण माता-पिता का आज्ञाकारी पुत्र था। वह नेत्रहीन वृद्ध दम्पति की आँखों का तारा तथा उनका एकमात्र सहारा था। आश्रम के भौतिक एवं आध्यात्मिक वातावरण में ही युवक श्रवण कुमार के चरित्र का विकास होता है।

Scanned by TapScanner

तृतीय सर्ग : आखेट सर्ग (२००३)

एक दिन राजा दशरथ के मन में आखेट की इच्छा जाग्रत हुई और उन्होंने अपने सारथी को बुलाकर रात्रि के चतुर्थ प्रहर में वन में जाने की इच्छा प्रकट की।

रात्रि में उन्होंने स्वप्न में देखा कि उनके बाण से एक हिरन का बच्चा मर गया है तथा हिरनी रो रही है।

शिकार हेतु राजा दशरथ रथ पर सवार होकर शीघ्र ही अपने इच्छित स्थान पर पहुँच गए तथा वहाँ धनुष-बाण सम्भाल कर किसी वन्य पशु की प्रतीक्षा करने लगे। दूसरी ओर श्रवण कुमार के माता-पिता को प्यास लगी। वे श्रवण को पानी लाने के लिए कहते हैं। श्रवण कुमार अपने माता-पिता की प्यास बुझाने के लिए जल लाने नदी के तट पर गया तथा जल भरने के लिए पात्र को नदी के जल में डुबोया। जल में पात्र डूबने की ध्वनि को किसी हिंसक पशु की जल पीने की ध्वनि समझकर दशरथ ने शब्दभेदी बाण चला दिया, जो श्रवण कुमार के हृदय में जाकर लगा। श्रवण कुमार तत्काल ही चीत्कार करते हुए गिर पड़ा। राजा दशरथ मानव-स्वर को सुनकर अत्यन्त दुःखी और चिन्तित हो जाते हैं।

चतुर्थ सर्ग : श्रवण सर्ग

श्रवण कुमार घायल अवस्था में नदी के तट पर पड़ा था। वह राजा दशरथ के सम्मुख करुण विलाप करते हुए कहता है कि आपने मुझे मारकर मेरे माता-पिता को असहाय कर दिया। मेरे माता-पिता नेत्रहीन हैं, मैं ही उनका एकमात्र सहारा हूँ, आपने मेरी हत्या नहीं की बल्कि मेरे माता-पिता की भी हत्या कर दी, क्योंकि वे मेरे बिना जीवित नहीं रहेंगे।

श्रवण कहता है कि मेरे माता-पिता प्यासे होंगे मैं यहाँ उनके लिए जल लेने आया था। वह राजा से आग्रह करता है कि वह उन्हें जल पिला दें।

राजा दशरथ श्रवण की बातें सुनकर आत्मग्लानि से भर उठे तथा उसके वृद्ध माता-पिता को जल पिलाने चले गए। श्रवण के समीप वे अपने सारथी को छोड़ गए। श्रवण ने अपने प्राण त्याग दिए।

Scanned by TapScanner

पंचम सर्ग : दशरथ सर्ग

पंचम सर्ग में दशरथ के अन्तर्द्वन्द्व, विषाद और अपराधबोध का वर्णन है। राजा दशरथ अपने इस कृत्य की आत्मग्लानि से भरे हुए थे। वे सोचते हैं कि वे इस पाप का प्रायश्चित किस प्रकार करें। इसी प्रकार के मानसिक उद्वेगों से व्याकुल राजा दशरथ उस आश्रम में पहुंच जाते हैं। जहाँ श्रवण के माता-पिता अपने पुत्र की प्रतीक्षा कर रहे थे।

षष्ठ सर्ग : सन्देश सर्ग

श्रवण के माता-पिता आश्रम में प्यास से व्याकुल होकर श्रवण की प्रतीक्षा कर रहे थे और चिन्तित थे कि श्रवण को आने में इतना विलम्ब क्यों हो रहा है। उसी समय राजा दशरथ जल से भरा पात्र लेकर वहाँ प्रवेश करते हैं। उनके पैरों की आहट सुनकर ऋषि दम्पति प्रसन्न होकर उन्हें श्रवण समझकर जल पिलाने के लिए कहते हैं और देर से आने का कारण पूछते हैं।

परन्तु जब राजा दशरथ उनसे जल पीने का आग्रह करते हैं तो वे उनका परिचय पूछते हैं। राजा दशरथ अत्यन्त दुःखी होकर उन्हें अपना परिचय देते हैं और उन्हें सम्पूर्ण प्रसंग से अवगत कराते हैं कि भूलवश उनका बाण श्रवण को लग गया और वह स्वर्गवासी हो गया। अब वह स्वयं ही उनके लिए जल लेकर आए हैं। श्रवण की मृत्यु का समाचार पाकर वृद्ध दम्पति विलाप करने लगे तथा स्वयं भी मृत्यु की इच्छा करने लगे।

सप्तम सर्ग : अभिशाप सर्ग

श्रवण के नेत्रहीन वृद्ध माता-पिता उसकी मृत्यु का समाचार पाकर अत्यन्त दुःखी और व्याकुल होते हैं। वे आँसू बहाते हुए दशरथ के साथ नदी तट पर श्रवण के मृत शरीर के निकट पहुँचते हैं। जैसे ही वे दोनों श्रवण के मृत शरीर को छूते हैं वे मूर्च्छित हो जाते हैं।

चेतना आने पर वे करुण विलाप करते हैं। तब श्रवण के पिता दशरथ को शाप देते हुए कहते हैं कि जिस प्रकार पुत्र शोक में मैं अपने प्राण त्याग रहा हूँ इसी प्रकार तुम भी अपने पुत्र के वियोग में तड़प-तड़प कर मरोगे।

पुत्र शोक में कलप रहा, जिस प्रकार मैं अजनन्दन।
सुत-वियोग में प्राण तजोगे इसी भाँति करके क्रन्दन।।

दशरथ इस शाप को सुनकर कांप उठे तथा अत्यन्त दुःखी हुए।

Scanned by TapScanner

अष्टम सर्ग : निर्वाण सर्ग (२००३, ०६)

इस सर्ग में ऋषि दम्पति का आत्मबोध वर्णित है। पर्याप्त विलाप करने के बाद श्रवण कुमार के पिता को यह आत्मबोध होता है कि मेरे शान्त हृदय में भी क्रोध कैसे आ गया? मैंने व्यर्थ ही दशरथ को शाप दे दिया जबकि दशरथ के हाथों ही मेरे पुत्र का वध होना तय था। उन्हें शाप देने का दुःख हुआ।

तभी श्रवण कुमार ने दिव्य रूप में प्रकट होकर अपने माता-पिता को सांत्वना दी और उन्हें अपने स्वर्ग पहुँचने का समाचार दिया जिसे सुनकर श्रवण के माता-पिता ने भी अपने प्राण त्याग दिए।

नवम सर्ग : उपसंहार

इस घटना के उपरान्त राजा दशरथ दुःखी मन से अयोध्या लौट आते हैं। वे इस घटना का वर्णन लोकनिन्दा के कारण किसी से नहीं करते और धीरे-धीरे इसे भूल जाते हैं।

दशरथ की वृद्धावस्था में जब कैकेयी को वरदान देने के फलस्वरूप राम वन जाने लगते हैं तब राजा दशरथ को ऋषि का शाप याद आता है, वे अपनी रानियों के सम्मुख इस घटना का वर्णन करते हैं तथा पुत्र के वियोग में तड़प-तड़प कर प्राण त्याग देते हैं।

यहीं इस खण्डकाव्य की कथा का समापन हो जाता है।

Scanned by TapScanner

'श्रवण कुमार' खण्डकाव्य के आधार पर

श्रवण कुमार का चरित्र - चित्रण

मुख्य बिन्दु :—

परिचय —

1. मातृ-पितृ भक्त :-
2. क्षमाशील एवं सरल स्वभाववाला :-
3. निश्छल एवं सत्यवादी :-
4. भाग्यवादी :-
5. भारतीय संस्कृति का सच्चा प्रेमी :
6. आत्म संतोषी :-
7. अहिंसक :-
8. संस्कारी :-

Scanned by TapScanner

उत्तर—श्रवण कुमार नामक खण्डकाव्य श्री शिवबालक शुक्ल द्वारा रामायण की कथा के एक प्रसंग पर आधारित है। इस खण्डकाव्य का नायक श्रवण कुमार है जो एक ऋषि-पुत्र है। वह नेत्रहीन माता-पिता का एकमात्र सहारा है। श्रवण कुमार मातृ-पितृ भक्त, आज्ञाकारी पुत्र है। वह सरयू नदी के तट पर स्थित आश्रम में अपने माता-पिता के साथ रहता है। उसका चरित्र एक आदर्श पुत्र का चरित्र है। श्रवण के चरित्र में अनेक विशेषताएं पाई जाती हैं, जो उसे इस खण्डकाव्य का केन्द्रीय चरित्र सिद्ध करती हैं। वही इस खण्डकाव्य का सर्वाधिक प्रमुख पात्र होने से नायक पद का भी अधिकारी है। उसकी चारित्रिक विशेषताएं इस प्रकार हैं :

(१) **मातृ-पितृ भक्त**—श्रवण के चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता उसकी मातृ-पितृ भक्ति है। वह प्रातःकाल उठते ही श्रद्धा-भक्तिपूर्वक माता-पिता को प्रणाम कर उनकी सेवा में जुट जाता है। एक बार जब उसके वृद्ध माता-पिता ने तीर्थ यात्रा पर जाने की इच्छा व्यक्त की तो श्रवण अपने माता-पिता को काँवर में बैठाकर तीर्थयात्रा कराकर उनकी इच्छा पूर्ति करता है। कवि के अनुसार :

बिठलाकर उनको काँवर में, करता वह गुरु भार वहन।
देवगृहों, तीर्थों को जाता, सदा कराने शुभ दर्शन॥

दशरथ के बाण से घायल होने पर भी श्रवण को अपने प्राणों की चिन्ता नहीं है। उसे तो अपने प्यासे माता-पिता की ही चिन्ता सता रही है :

मुझे बाण की पीड़ा सम्प्रति इतनी नहीं सताती है।
पितरों के भविष्य की चिन्ता जितनी व्यथा बढ़ाती है॥

(२) **क्षमाशील एवं सरल स्वभाव वाला**—श्रवण कुमार सरल स्वभाव वाला तथा क्षमाशील युवक है। उसके हृदय में द्वेष भाव तथा ईर्ष्या रंचमात्र भी नहीं है। दशरथ के बाण से घायल होने पर भी वह दशरथ का सम्मान करता है और दशरथ को क्षमा कर देता है।

Scanned by TapScanner

(३) **निश्छल एवं सत्यवादी**—श्रवण के पिता वैश्य तथा माता शूद्र वर्ण की थीं। श्रवण स्पष्टवादी है। वह किसी से कुछ छिपाता नहीं है। दशरथ द्वारा ब्रह्म हत्या की सम्भावना प्रकट करने पर वह उन्हें स्पष्ट बताता है कि वह ब्रह्म कुमार नहीं है :

वैश्य पिता, माता शूद्रा थी, मैं यों प्रादुर्भूत हुआ।
संस्कार के सत् प्रभाव से, मेरा जीवन पूत हुआ।।

वह यह मानता है कि जन्म से नहीं अपितु संस्कारों से मानव को सम्मान प्राप्त होता है।

(४) **भाग्यवादी**—श्रवण एक भाग्यवादी व्यक्ति है। वह मानता है कि जो भाग्य में लिखा होता है, उसे कोई मिटा नहीं सकता :

जो भवितव्य वही होता है, उसे सका कब कोई टाल।

दशरथ के बाण से अपनी मृत्यु को भी वह अपना भवितव्य मानता है, अतः दशरथ को क्षमा करके अपनी महानता का परिचय देता है।

(५) **भारतीय संस्कृति का सच्चा प्रेमी**—श्रवण कुमार भारतीय संस्कृति का सच्चा प्रेमी है। चार वेद और छह दर्शन ही भारतीय संस्कृति का आधार हैं। धर्म के दस लक्षणों को वह अपने जीवन में धारण किए हुए है :

दम, अस्तेय, अक्रोध, सत्य, धृति, विद्या, क्षमा, बुद्धि सुकुमार।
शौच तथा इन्द्रिय निग्रह हैं, दस सदस्य मेरे परिवार।

Scanned by TapScanner

(६) **आत्म सन्तोषी**—श्रवण कुमार स्वभाव से सन्तोषी है। उसे भोग तथा ऐश्वर्य की कामना नहीं है। उसका कथन है :

वन्य पदार्थों से ही होता रहता मम जीवन-निर्वाह।
ऋषि हूँ, नहीं किसी को पीड़ा पहुँचाने की उर में चाह॥

मेरा जीवन निर्वाह बड़ी सरलता से इस वन से प्राप्त होने वाली वस्तुओं से हो जाता है। अधिक सुख भोग की कामना नहीं है तथा मेरा हृदय किसी को पीड़ा नहीं पहुँचाना चाहता।

(७) **अहिंसक**—अहिंसा भाव भी श्रवण के चरित्र की एक विशेषता है।

(८) **संस्कार को महत्व देने वाला**—श्रवण कुमार कर्म, शील एवं संस्कारों को महत्व देता है। उसके जीवन में पवित्रता संस्कारों के प्रभाव के कारण ही है :

विप्र द्विजेतर के शोणित में अन्तर नहीं रहे यह ध्यान।
नहीं जन्म के संस्कार से, मानव को मिलता सम्मान॥

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि श्रवण कुमार इस खण्डकाव्य का नायक है। वह सत्यवादी, भाग्यवादी, सरल स्वभाव वाला तथा मातृ-पितृ भक्त है। अहिंसा, सत्य और कर्तव्यपरायणता में उसका चरित्र महान आदर्श का काम करता है। वह सारी घटनाओं का केन्द्र बिन्दु है तथा इस खण्डकाव्य का केन्द्रीय पात्र है। नायकत्व के लिए वांछित गुण उसके चरित्र में विद्यमान है अतः उसे इस खण्डकाव्य का नायक निर्विवाद रूप से माना जा सकता है। उसके चरित्र के गुण पाठकों के हृदय पर प्रभाव डालने में भी समर्थ हैं।

Scanned by TapScanner

'श्रवण कुमार' खण्ड काव्य के आधार पर
दशरथ की चारित्रिक विशेषताएँ /
चरित्र चित्रण

परिचय :-

1. उत्तम कुल में उत्पन्न :-
2. विनम्र एवं दयालु :-
3. योग्य शासक :-
4. कुशल धनुर्धर :-
5. प्रायाश्चित एवं आत्मग्लानि से युक्त :-
6. उदार-हृदयी :-

Scanned by TapScanner

उत्तर—राजा दशरथ अयोध्या के राजा थे वे महाराज अज के पुत्र थे। वे प्रतापी शासक तथा आखेट प्रेमी थे।

'श्रवण कुमार' खण्डकाव्य में राजा दशरथ आरम्भ से अन्त तक विद्यमान हैं। दशरथ के चरित्र की विशेषताएं निम्न प्रकार हैं :

(१) **उत्तम कुलोत्पन्न**—राजा दशरथ उत्तम कुल में उत्पन्न हुए थे। पृथु, त्रिशंकु, सगर, दिलीप, रघु, हरिश्चन्द्र और अज जैसे महान राजा, दशरथ के पूर्वज थे। इनका वंश इक्ष्वाकु नाम से प्रसिद्ध है। उन्हें अपने वंश पर गर्व है :

क्षत्रिय हूँ मम शिरा जाल में, रघुवंशी है रक्त प्रवाह।
हस्ति पोत अथवा मृगेन्द्र के पाने की है उत्कट चाह॥

(२) **विनम्र एवं दयालु**—राजा दशरथ के हृदय में दया का भाव था। उनमें अहंकार न था, दूसरों के दुःखों को देखकर वे बहुत अधिक दुःखी होते थे। स्वप्न में हिरन की मृत्यु को देखकर वे दुःखी होते हैं :

करने को गए समुद्यत ढाढ़ मार करके रोदन।
नेत्र खुल गए स्वप्न समझकर किया पार्श्व का परिवर्तन॥

Scanned by TapScanner

(३) **योग्य शासक**—राजा दशरथ के राज्य में सभी स्थानों पर सामंजस्य था प्रजा सुखी व सन्तुष्ट थी सभी को न्याय मिलता था। अतः वे योग्य शासक थे।

सुख, समृद्धि आमोद-पूर्ण था कोशलेश का शुभ शासन।

(४) **कुशल धनुर्धर**—राजा दशरथ धनुर्विद्या में निपुण थे। वे आखेट में विशेष रुचि रखते थे तथा शब्दभेदी बाण चलाने में उन्हें कुशलता प्राप्त थी।

शब्द-भेद के निपुण अहेरी, रवि कुल के भावी भूपाल।

(५) **प्रायश्चित एवं आत्मग्लानि से परिपूर्ण**—जब भूलवश राजा दशरथ का शब्द-भेदी बाण श्रवण कुमार के लग जाता है और उसकी मृत्यु हो जाती है तब राजा दशरथ प्रायश्चित तथा आत्मग्लानि से भर जाते हैं। वे कहते हैं :

मलहम कौन भयंकर व्रण पर जिसका लेप करूँ जाकर?
भू में धसूँ, गिरूँ गिरिवर से, सरि में डूब मरूँ जाकर।

अपने इस कृत्य पर उन्हें अपने कुल के अपयश का दुःख सता रहा है। धरती माता से वे कहते हैं :

फटो धरणि, मैं समा सकूँ, तुम करो ग्रहण, मम भाग्य जगे।
पर वसुन्धरे मुझे शरण दे, तुम्हें न कहीं कलंक लगे।

(६) **उदारता**—राजा दशराथ श्रवण के पिता के शाप से काँप उठते हैं। वे अपने पाप को स्वीकार करके फल भोगने को तैयार रहते हैं। उन्होंने अपनी शाप कथा भय के कारण किसी से नहीं कही, परन्तु यह वेदना उनके हृदय में कांटे की तरह चुभती रही :

रही खरकती हाय शूल सी पीड़ा उर में दशरथ के।
ग्लानि-त्रपा, वेदना विमण्डित शाप-कथा वे कह न सके।

इस विवेचन से स्पष्ट है कि दशरथ योग्य शासक थे। वे एक कुशल शिकारी थे तथा धनुर्विद्या में निपुण शब्दभेदी वाण चलाने में कुशल युवराज थे। उच्च कुल में उत्पन्न होने पर भी उनमें लेशमात्र भी अहंकार न था। वे अपने कुकृत्य पर प्रायश्चित तथा आत्मग्लानि की आग में जलते रहते हैं। कवि को राजा दशरथ के चरित्र-चित्रण में पूर्ण सफलता मिली है। राजा दशरथ की आत्मग्लानि उन्हें एक महान चरित्र वाला व्यक्ति सिद्ध करती है। दशरथ के अन्तर्मन की मार्मिक दशा और उनका अपराध-बोध चित्रित करने में कवि को विशेष सफलता मिली है।

Scanned by TapScanner